भगवतोचरण वमा क उपन्यासा को य्गोन प्रासंगिकता

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.) के

कला संकाय के अंतर्गत हिन्दी विषय में

पी–एच.डी. उपाधि

हेतु प्रस्तुत

शोध–कार्य की रूपरेखा

सन्–2016

(अध्यादेश 45 की कंडिका 05 के अनुसार)

शोधार्थी – हेमलता खिचरिया/वर्मा

शोध केन्द्र

शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर (स्वशासी)

महाविद्यालय, जिला–दुर्ग (छत्तीसगढ़)

भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासों की युगीन प्रासंगिकता

शोध–कार्य की रूपरेखा

सन्–2016

शोध–निर्देशक	सह शोध–निर्देशक	शोधार्थी
डॉ. शैलेन्द्र कुमार ठाकुर	डॉ. श्रीमती कृष्णा चटर्जी	हेमलता खिचरिया/वर्मा
सहा. प्राध्यापक(हिन्दी)	सहा. प्रध्यापक(हिन्दी)	
डॉ. खूबचंद बघेल,	शास. विश्वनाथ यादव	शास. विश्वनाथ यादव
स्नातकोत्तर महाविद्यालय,	तामस्कर स्नातकोत्तर	तामस्कर स्नातकोत्तर
भिलाई–3, दुर्ग (छ.ग.)	(स्वशासी) महा., दुर्ग (छ.ग.)	(स्वशासी) महा., दुर्ग (छ.ग.)

प्राचार्य

शोध केन्द्र

शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर (स्वशासी) महाविद्यालय,

जिला–दुर्ग (छत्तीसगढ़)

शोध प्रबंध की रूपरेखा

1. प्रस्तावित शोध–कार्य का शीर्षक
2. प्रस्तावना
3. प्रस्तावित क्षेत्र में पूर्व में किए गये शोध कार्य का संक्षिप्त पुनरावलोकन
4. प्रस्तावित शोध कार्य का उद्देश्य
5. प्रस्तावित शोध कार्य का उल्लेखनीय योगदान
6. प्रस्तावित शोध प्रविधि
7. प्रतावित शोध कार्य का संभावित परिणाम
8. उपस्कारक ग्रंथ सूची

1. प्रस्तावित शोध–कार्य का शीर्षक :

भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासों की युगीन प्रासंगिकता

प्रस्तावना :

भारतीय हिन्दी साहित्य जगत् में 'भगवतीचरण वर्मा' एक प्रौढ़ कलाकार के रूप में स्वीकार किये जाते है। यद्यपि उन्हें काव्य से लेकर गद्य तक की समस्त विधाओं यथा कहानी, नाटक, निबंध, एकांकी, चित्रालेख, संस्मरण, कविता, रेडियो–रूपक, महाकाव्य, आत्मकथा, एवं गीति नाट्य आदि पर अपनी लेखनी सफलतापूर्वक चलाने का गौरव प्राप्त है। प्रत्येक कलाकार को अपने जीवन संघर्ष के क्रम के कुछ संकटों का सामना करना पड़ता है और इन संघर्षशील संकटो के परिणामस्वरूप लब्ध अनुभूतियों से कलाकार निखर उठता है। इस परिप्रेक्ष्य में 'वर्मा जी' का निजी जीवन व उनका साहित्य सृजनशील व्यक्तित्व समीचीन प्रतीत होता है। 'वर्मा जी' अपनी साहित्य सृजन के प्रारंभिक दौर में अपनी कलात्मकता को व्यवसायिकता की दृष्टि से देखने के पक्षधर नही थे, किन्तु अपनी संघर्षशील जीवन के अनुभूतियों से उन्होंने स्वीकारा कि कला का व्यवसायीकरण निन्दनीय नही है।

साहित्य सृजन के क्षेत्र में प्रथम दृष्टतया प्रतीत होता है कि कोई भी कलाकार अपनी कलात्मकता का सृजन स्वसुख की दृष्टि से ही करता है, किन्तु उसके अर्न्तमन में अपनी कला द्वारा परसुख, यश व प्रशंसा पाने की चाहत भी प्रबल रहती है। फलतः 'वर्मा जी' का औपन्यासिक सृजन के क्षेत्र में प्रवेश करने का यह एक प्रमुख कारण था। जिसके लिये उन्होंने औपन्यासिक सृजनशीलता के क्षेत्र में कैसे लिखा जाता है? की कला के साथ–साथ कैसे जिया जाता है? की कला को भलीभांति आत्मसात् किया। साहित्य सृजन ही 'वर्मा जी' के जीवन का ध्येय रहा है और इस ध्येय पूर्ति हेतु उन्होनें स्वयं के सत्य, पाठकों के सत्य व समाज के सत्य को समन्वित रूप में साहित्य सृजन द्वारा मुखरित किया है।

'वर्मा जी' की रचना शक्ति अपनी अनुभूतियों से परिपूर्ण तथा उनके व्यक्तिगत रूचियों की सहायक है। उन्होंने अपने उपन्यासों के सृजन हेतु उन क्षेत्रो का चयन किया, जिसमें विविधता व्याप्त ह। किन्तु 'वर्मा जी' द्वारा रचित उपन्यासों के विषय पृथक होते हुए भी नवीनता से परिपूर्ण है। यद्यपि 'वर्मा जी' ने अपने अधिकांश उपन्यासों की रचना सामाजिक पृष्ठभूमि पर ही की है, जिसमें सामाजिक जीवन से प्रभावित व्यक्ति का संघर्ष एवं उसका अहम् भाव प्रबल रूप में मुखरित हुआ है, जिससे व्यक्ति और समाज के अन्योन्यात्रित संबंधो ने स्पष्ट अभिव्यक्ति प्राप्त की है। उनके उपन्यासों में समाज, धर्म, संस्कृति, राजनीति और अर्थ का सम्मिश्रण इस रूप में अभिव्यक्त हुआ है, कि उनका विभिन्न श्रेणियों में विभाजन ही अधिक युक्तिसंगत प्रतीत होता है। वही प्रमभाव, कामभाव, नियतिवाद व व्यवस्था के प्रति विद्रोह कुछ ऐसे विषय है, जिसकी अभिव्यक्ति 'वर्मा जी' के प्रायः सभी उपन्यासा में हुई है। यद्यपि विविधता के धरातल पर स्थित होते हुए भी उनके उपन्यासों की अर्न्तवर्ती धारा एक ही रही। विचार और दर्शन ने जहां उनके औपन्यासिकता की गरिमा को बढ़ाया है, वही कहानी पाठको के अंर्तमन को चिंतन हेतु प्ररित करती है। नारी ही इस सृजनशील जगत् की मूल है तथा पारिवारिक संदर्भो में उसकी सार्थकता भी है। इसीलिये 'वर्मा जी' ने नारी के विविध रूपों का, नारी जीवन में व्याप्त समस्याओं का बड़ा ही मर्मस्पशी व हृद्यग्राही चित्रण अपने उपन्यासों में किया है। अर्थशास्त्र के विद्यार्थी होने के कारण 'वर्मा जी' ने आर्थिक शोषण का यथार्थ चित्रण करते हुए एक ओर जहां अर्थ की महत्ता स्वीकार की है, वही इसकी अतिशयता तथा अर्थलोलुपता को समाज एवं राष्ट्र के लिये घातक भी बताया है। साम्राज्यवादी शासन और शोषण को स्पष्ट करते हुए जहा सामंत और जमीदारों की यथार्थ स्थिति उनके उपन्यासों में मुखर हो उठो, वही राजनीतिक समाज जीवन का चित्रण करते समय 'वर्मा जी' के अंतःस्थल में राष्ट्रीयता की भावना, जनसामान्य के प्रति आत्मीयता व सहानुभूति अभिव्यंजित हुई है। फलतः उनके उपन्यासों में चित्रित राजनीतिक समाज जीवन यथार्थ के धरातल पर सजीव हो उठा।

इस प्रकार दृष्टव्य है कि खड़ी बोली हिन्दी में अपने उपन्यासों की रचना करके किसी भी प्रकार के पूर्वाग्रहों से विरत रहकर पात्रों के मानसिक धरातल एवं भावानुकुल भाषा को विविध शब्दावलियो के प्रयोग से कथा प्रवाह को सरस व स्वाभाविक बनाने में 'वर्मा जी' ने सिद्धस्थता प्राप्त की है। 'वर्मा जी' ने संस्कृत के तत्सम व तद्‌भव शब्दो का प्रयोग कर, प्रकृति चित्रण व रूप वर्णन तथा विचारो की मुखरित अभिव्यक्ति, अरबी–फारसी, अंग्रेजी व क्षेत्रीय बोलियों के प्रयोग, मुहावरा, कहावतो व सूक्तियों के प्रयोग काव्यात्मक एवं सरल शैली का अनुपम प्रयोग तथा मानसिक अर्न्तद्वन्दों के यथार्थ भाव चित्रण द्वारा अपने औपन्यासिक सृजनशीलता को विशिष्टता के धरातल पर स्थापित किया है। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है, कि 'श्री भगवतीचरण वर्मा जी' के औपन्यासिक कृतियों में युग चेतना के भाव ने स्पष्टतः अभिव्यक्ति पायी है। जो आने वाली कई पीढ़ियों का दिशा बोध करने में सहायक होगी। 'वर्मा –जी' के उपन्यासों में तद्‌युगीन समाज के प्रत्येक पहलुओं को यथार्थकता एवं सार्थकता के साथ प्रतिबिंबित करने की अदम्य शक्ति व अनुपम सौन्दर्य के कारण ही मैनें उनकी रचनाओं को अपने शोध का विषय बनाया। मेरे प्रस्तावित शोध–कार्य का शीर्षक है – **भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासों को युगीन प्रासंगिकता।**

इस विषय पर शोध कार्य करने की प्रेरणा मुझे हिन्दी साहित्य जगत के सशक्त हस्ताक्षर 'श्री भगवतीचरण वर्मा' के औपन्यासिक कृतियों के पठन् से प्राप्त हुई। उपन्यास व कथा ही मेरे पठन् का रूचि –कर क्षेत्र रहा है। फलतः उक्त विषय पर शोध कार्य करने की इच्छा मैंने गुरूवर शाध निर्देशक– डॉ. शैलेन्द्र कुमार ठाकुर के समक्ष व्यक्त की तो उनका अपूर्व सहयोग व प्रोत्साहन मुझे इस शोध कार्य हेतु प्राप्त हुआ। मेरा प्रयास होगा कि इस विषय पर किया गया शोध कार्य हिन्दी उपन्यासों के सृजनशील क्षेत्र में नये आयामों को प्रस्तुत करने में समर्थ सिद्ध हो। इस दृष्टि स यह शोध कार्य की रूपरेखा सुधि विद्वान परीक्षकों के समक्ष मुल्यांकन हेतु प्रस्तुत है।

3. प्रस्तावित शोध–कार्य का निम्नांकित अध्यायों में विभक्त कर पूर्ण किया जायेगा :

प्रस्तावना :

विषय की रूपरेखा

विषय की व्याप्ति और सीमाएं, पूर्वानुमान, उद्देश्य, प्रदेय

अध्याय–एक : भगवतीचरण वर्मा का जीवनवृत्त

1.1 परिचय

1.2 शिक्षा

1.3 व्यक्तित्व

1.4 पुरस्कार एवं उपलब्धियाँ

अध्याय–दो : भगवतीचरण वर्मा की लेखन कला एवं उनका साहित्य

2.1 काव्य संग्रह

2.2 उपन्यास

2.3 कहानी संग्रह

2.4 नाटक

2.5 एकांकी

अध्याय–तीन : भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासों में निहीत प्रमुख समस्याएँ

3.1 पतन

3.2 चित्रलेखा

3.3 तीन वर्ष

3.4 टेढ़े–मेढ़े रास्ते

3.5 आखिरी दांव

3.6 अपने खिलौनें

3.7 भूले–बिसरे चित्र

3.8 वह फिर नही आई

3.9 सामर्थ्य और सीमा

3.10 थके पॉव

3.11 रेखा

3.12 सीधी सच्ची बातें

3.13 सबहिं नचावत राम गोसाईं

3.14 प्रश्न और मरीचिका

3.15 युवराज चुण्डा

अध्याय–चार : भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासों में युगीन संदर्भ और प्रासंगिकता

4.1 तद्युगीन समाज का चित्रण

4.2 आर्थिक जीवन

4.3 राजनैतिक चिंतन

4.4 धार्मिक जीवन

4.5 पारिवारिक परिदृश्य

4.6 मनोवैज्ञानिकता

अध्याय–पाँच : भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासो में शिल्पगत चेतना

5.1 भगवतोचरण वर्मा के उपन्यासो में शिल्पगत चेतना का स्वरूप

5.2 भगवतीचरण वर्मा का भाषा–शिल्प

5.3 शैलीगत वैशिष्ट्य

5.4 संवाद योजना एवं प्रस्तुति

उपसंहार

परिशिष्ट :

(अ) आधार–ग्रंथ

(ब) संदर्भ–ग्रंथ

(स) पत्र–पत्रिकाए

4. प्रस्तावित क्षेत्र में पूर्व में किये गये शोधकार्य का संक्षिप्त पुनरावलोकन :

भगवती चरण वर्मा के उपन्यासों में जीवन दर्शन, शोधाथी – राजेश कुमार श्रीवास, शोध निर्देशक – श्रीमती शीलादानी विश्वविद्यालय – पं रविशंकर शुक्ल वि. वि. रायपुर (छ. ग.)

4. प्रस्तावित शोध कार्य का उद्देश्य :

'वर्मा जी' के साहित्य सृजन की पृष्ठभूमि विविधता के धरातल पर अंकित ह। उनका लेखन क्षेत्र इतना व्यापक हा उठा है, कि इसमें भारतीय जन जीवन का प्रत्येक कोना मुखरित हो अभिव्यक्ति पा सका। इस संदर्भ में जहां भारतीय समाज में व्याप्त शोषक व शोषित का स्पष्ट अंकन सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक व सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्यों में हुआ है, वही मनोवैज्ञानिक धरातल पर व्याप्त अर्न्तद्वंदो व आत्मपीड़न का यथार्थ चित्रण भी मुखर हो उठा। 'वर्मा जी' की समस्त रचनाएं हिन्दी साहित्य जगत् के लिये अमूल्य साहित्यिक धरोहर है, और इन रचनाओं में अभिव्यक्त मानवीय मुल्यों व चेतना रूपी संदेशों को जन समुदाय तक पहुंचना तथा 'वर्मा जी' के हिन्दी साहित्य जगत् में प्रेमचन्दोत्तर युग के सशक्त हस्ताक्षर होने की गरिमा को बनाये रखना ही मेरे इस शोध कार्य का प्रमुख उद्देश्य है।

5. प्रस्तावित शोध कार्य का उल्लेखनीय योगदान :

'वर्मा जी' का संपूर्ण जीवन मध्यमवर्गीय समाज में व्याप्त संघर्षशीलता का पुंज रहा है, और यही संघर्षशीलता का प्रतिबिंबित स्वरूप चाहे बाह्य जगत् का हो या अंर्तजगत् का सम्मिश्रण रूप में उनके समस्त रचनाओ में अभिव्यक्त हुआ है। फलतः यह शोध कार्य 'वर्मा जी' के व्यक्तित्व व कृतित्व को जानने, समझने तथा उनके साहित्यों में मुखरित तदयुगीन बोध के विविधतामय किन्तु यथार्थ स्वरूप के दिग्दर्शन हेतु महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा।

7. शोध–कार्य हेतु प्रस्तावित शोध प्रविधि :

आधार ग्रंथ के रूप में 'भगवतीचरण वर्मा' द्वारा रचित औपन्यासिक रचनाएं व सहायक ग्रंथो के रूप में 'वर्मा जी' द्वारा रचित अन्य साहित्यिक रचनाएं व 'वर्मा जी' के कृतित्व को आधार मानकर लिखे गये विद्वानों के ग्रंथ, विभिन्न ग्रंथालयों की संदर्भ पुस्तकें एवं विभिन्न साहित्यिक पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से शोध कार्य पूरा करूंगी।

8. प्रस्तावित शोध–कार्य का संभावित परिणाम :

भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासो की युगीन प्रासंगिकता, विषय पर किया गया यह शोध कार्य हिन्दी साहित्य जगत् के सृजनशील रचनाकारो, पाठकों और शोधार्थियों को आशातीत नई संभावनायें प्रदान करेगा।

परिशिष्ट :

(अ) आधार–ग्रंथ

1. वर्मा, भगवतीचरण. पतन. इलाहाबाद : भारती भण्डार, 1928
2. वर्मा, भगवतीचरण. चित्रलेखा. इलाहाबाद : भारती भण्डार, 1934
3. वर्मा, भगवतीचरण. तीन वर्ष. इलाहाबाद : भारती भण्डार, 1936
4. वर्मा, भगवतीचरण. टेढ़े–मेढ़े रास्ते. इलाहाबाद : भारती भण्डार, 1946
5. वर्मा, भगवतीचरण. आखिरी दाँव. इलाहाबाद : भारती भण्डार, 1950
6 .वर्मा, भगवतीचरण. अपने खिलौन. इलाहाबाद : भारती भण्डार, 1957
7. वर्मा, भगवतीचरण. भूले–बिसरे चित्र. दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1959
8. वर्मा, भगवतीचरण. वह फिर नही आई. दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1960
9. वर्मा, भगवतीचरण. सामर्थ्य और सीमा. दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1962
10. वर्मा, भगवतीचरण. थके पाँव. देहरादून : साहित्य सदन, 1963
11. वर्मा, भगवतीचरण. रेखा. दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1964
12. वर्मा, भगवतीचरण. सीधी सच्ची बाते. दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1968
13. वर्मा, भगवतीचरण. सबहिं नचावत राम गोसाईं. दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1970
14. वर्मा, भगवतीचरण. प्रश्न और मरीचिका. दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1973
15 वर्मा, भगवतीचरण. युवराज चुण्डा. दिल्ली : राजकम
16. वर्मा, भगवतीचरण. धुप्पल. दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1981
17. वर्मा, भगवतीचरण. चाणक्य. दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1982

(ब) संदर्भ–ग्रंथ

(काव्य संग्रह)

वर्मा, भगवतीचरण –''मधुकण'', इलाहाबाद : भारती भण्डार, 1932

वर्मा, भगवतीचरण –''प्रेमसंगीत'', इलाहाबाद : भारती भण्डार, 1937

वर्मा, भगवतीचरण –''एक दिन'', लखनऊ : गंगा पुस्तक माला, 1938

वर्मा, भगवतीचरण –''मानव'', इलाहाबाद : भारती भण्डार, 1938

वर्मा, भगवतीचरण –''त्रिपथगा'', इलाहाबाद : भारती भण्डार, 1954

वर्मा, भगवतीचरण –''रंगो से मोह'', इलाहाबाद : भारती भण्डार, 1963

वर्मा, भगवतीचरण –''मेरी कविताएं'', दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1974

वर्मा, भगवतीचरण –''सविनय और एक नाराज कविता'', : 1984

(कहानी–संग्रह)

वर्मा, भगवतीचरण –''इन्स्टॉलमेंट'', इलाहाबाद : भारती भंडार, 1936

वर्मा, भगवतीचरण –''राख और चिंगारी'', इलाहाबाद : साहित्य केन्द्र, 1938

वर्मा, भगवतीचरण –''दो बांके'', इलाहाबाद : भारती भंडार, 1950

वर्मा, भगवतीचरण –''मोर्चाबंदी'', दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1976

वर्मा, भगवतीचरण –''मेरी कहानियां'', दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1974

(नाटक)

वर्मा, भगवतीचरण –''बुझता दीपक'', इलाहाबाद : भारती भंडार, 1953

वर्मा, भगवतीचरण –''रूपया तुम्हें खा गया'', दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1955

वर्मा, भगवतीचरण –''वसीयत'', दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1978

वर्मा, भगवतीचरण –''मेरे नाटक'', दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1972

(आलोचना)

वर्मा, भगवतीचरण –''साहित्य के सिद्धांत तथा रूप'', दिल्ली : राजकमल प्रकाशन 1976

(आत्मकथा)

वर्मा, भगवतीचरण –''कहि न जाय का कहिए''

(निबंध संग्रह)

वर्मा, भगवतीचरण –''हमारी उलझन'', इलाहाबाद' भारती भंडार

वर्मा, भगवतीचरण –''साहित्य की मान्यताएं'', इलाहाबाद' हिन्दूस्तानी एकेडमी 1952

(एकांकी)

वर्मा, भगवतीचरण –''दो कलाकार''

वर्मा, भगवतीचरण –''सबसे बड़ा आदमी''

वर्मा, भगवतीचरण –''चौपाल''

(रेखाचित्र,संस्मरण)

वर्मा, भगवतीचरण –''ये सात और हम'' 1965

वर्मा, भगवतीचरण –''अतीत के गर्त से'', दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1979

1. उपाध्याय, देवराज. आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य और मनोवैज्ञानिक, इलाहाबादः साहित्य भवन लिमिटेड, 1956
2. गणेशन. हिन्दी उपन्यासो का अध्ययन, दिल्लीः राजपाल एण्ड सन्स, 1960
3. सिंह, त्रिभुवन. हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, 1965
4. सत्यपाल. प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी उपन्यासों की शिल्प विधि. इलाहाबादः लोक भारती प्रकाशन, 1968
5. मिश्र, रामदरश. हिन्दी उपन्यास एक अर्न्तयात्रा. नई दिल्लीः राजकमल प्रकाशन, 1968
6. मदान, इन्द्रनाथ. समकालीन साहित्य एक नई दृष्टि. नई दिल्लीः लिपि प्रकाशन, 1977
7. गुप्त, बालकृष्ण. हिन्दी उपन्यास सामाजिक संदर्भ. कानपुरः अभिलाषा प्रकाशन, 1978

8. मानधानें, धनराज. उपन्यास का मनोविश्लेषण. कानपुर : अन्नापूर्णा प्रकाशन, 1998

9. सिंह, जवाहर लाल. भगवतीचरण वर्मा के उपन्यास और युग चेतना. वाराणसी : कला प्रकाशन, 2000

10. अरोड़ा, ललिता. उपन्यासकार भगवतीचरण वर्मा एक अध्ययन. नई दिल्ली : भारतीय ग्रंथ निकेतन, 2001

11. चौधरी, विनय एस.. भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासो में चित्रित समाज जीवन. कानपुर : अतुल प्रकाशन, 2008

12. उमरे, करूणा. भगवतीचरण वर्मा के साहित्य में चित्रित प्रवृत्तियाँ. कानपुर : साहित्य रत्नालय. 2010

13. उमरे, करूणा. भगवतीचरण वर्मा का गद्य साहित्य. कानपुर : गरिमा प्रकाशन, 2014

(स) पत्र–पत्रिकाएँ

दैनिक पत्र :

1. भास्कर, दैनिक, रायपुर

2. देशबंधु, दैनिक, रायपुर

3. हरिभूमि, दैनिक, रायपुर(स) पत्र–पत्रिकाए